परमेश्वर के इच्छा मे जीवन जीना

जनवरी १ ः हमारी समस्याओ का कारण

युहन्ना १७ ः ३

हमारे देश , जीवन , परिवार , कलिसिया और समाज के समस्याओ का कारण हम २ रे इतिहास १५ ः १ से ६ मे देखते है।

पहली बात जो उनमे उपस्थित नही थी वो है ' **सच्चे परमेश्वर** ' ।
इस्राएल नास्तिक नहीं बन गया था । मंदिर में उनकी उपस्थिति भी थी। बलि प्रज्जलित कर जलाने का सिलसिला जारी रहा। अपनी सभी धार्मिक गतिविधियों के के बावजूद, इसराइल ने **सच्चे परमेश्वर** का एक सही दृष्टिकोण खो दिया था।
वे एक सुविधाजनक परमेश्वर चाहते थे, ताकि उसे वे नियंत्रण कर सके। वे राजा के बिना एक राज्य चाहते थे ।
वे सिर्फ नाममात्र शासक और एक कठपुतली चाहते थे। फिर भी कोई राजा या देवता जिसपर आप प्रभुता करते है वो सच्चा परमेश्वर या सच्चा राजा नही हो सकता। सच्चा परमेश्वर आपमे समा नही जाता बल्की आप उसमे समा जाते है।
हमारी संस्कृति भी सच्चे परमेश्वर को नहीं चाहती है। सार्वजनिक सभाओ मे अच्छी प्रार्थना करने के लिए।
हमारी संस्कृति केवल श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहती है। फिर भी कईबार हम अपने विचारो और कार्यो को परमेश्वर के अधीन न होकर एक श्रध्दांजली अर्पन करते है। हम अपने संस्कृती के झुठे विचारो से परमेश्वर को हानिरहित मान रहे है। हम परमेश्वर को सिर्फ नाम के लिए राजा मानते है । लेकिन उसके सामर्थ और अधिकार दुसरो को और कईबार अपने आप को देते है।

प्रतिबिंब ः
श्रध्दांजली और सच्ची आराधना मे क्या अंतर है**?**
आपके जीवन मे कौनसे क्षेत्र मे आप परमेश्वर को सिर्फ एक आकृती के रूप में देखते है न कि आपको सच्चा प्रभू**?**
हम अपने विचारो और कार्यो को परमेश्वर के इच्छानुसार कैसे चला सकेते है**?**

प्रार्थना ः मुझे ज्ञान और क्षमता दो कि**,** मै जो भी करता हू उसमे आप को ढूंढ सकु और मै आपके राज्य के अनुसार जीवन जी सकु **.**

जनवरी २ ः सत्य का मानक

युहन्ना १ः १

हम अक्सर शिकायत करते है कि अविश्वासी क्या करते है। '२ रे इतिहास १५' मे हम देखते है कि इस्त्राएल ने सच्चे परमेश्वर को नही ढुंढा। यही उनकी पहली समस्या थी और आज हमारे देश मे हमारी समस्या भी यही है। दुसरा कारण जो इस्त्राएल को नाश की ओर लेके गया वो है सिखानेवाले याजको कि कमी। वचन यह नही सिखाता कि उनके बीच याजक नही । लेकिन याजको ने सच्चाई सिखाना बंद किया था। उन्होने मनोरंजन के लिए अपने ज्ञान का व्यापार किया था। आराधना सामाजिक क्लब मे बदलकर गिर गई थी।

कलिसिया संकृती और विचारो को बदलने वाला केंद्रबिंदू नही रहा था जहा लोग परमेश्वर को गंभीरता से ले।

इस्त्राएल मे उन धर्मी अगुओ कि कमी थी जो वचन के अधिकार और सच्चई को गंभीरता से ले। सत्य का मुद्दा महत्वपुर्ण है। सच्चाई कमी से एक विवेकहिन समाज बनता है। लोग अपने विचोरो मे संवेदनाहिन हो जाते है और सही और गलत को समजने कि भावना को खो देते है। ऐसे समाज मे खुद के लिए एक कानुन बन जाता है और समाज मे अराजकता आ जाती है।

जब एक समाज सत्य को खोता है तो लोग जीने का अर्थ खो देते है क्योंकि लोग कभी भी किसी भी चीज के बारे मे निश्चीत नही होते। सच्चाई का एक ही स्तर है और है और वो है सच्चे परमेश्वर का न बदलने वाला वचन।

प्रतिबिंब ः

मसिही जीवन मे परमेश्वर का वचन महत्वपुर्ण क्युं है**?**
हम हमारे दिलो को परमेश्वर के वचन कि सच्चाई ओर कैसे लगा सकते है**?**

प्रार्थना ः

मै आपकी प्रशंसा करता हूं और आपके नाम को धन्यवाद देता हूं कि आपने हमे आपको जानने कि और आपके वचन को समझने की क्षमता दी है।

जनवरी ३ ः खराब जानकारी

रोमियो १२ ः १२

जब हम अपने देश या समाज कि खबरे सुनते है तो हमे अराजकता या अशांती दिखाई देती है। तिसरी बात जिसकी इस्त्राएल मे कमी थी वो है 'परमेश्वर के नियम'।

जब समाज बुरी या खराब जानकारी के नजर से परमेश्वर रूप बनाता है तो परमेश्वर अपने नियमो का संयम निकालते है और बुराई बेबुनियादी से बढती है।सच्चाई यही है कि आज हम अपने समाज को तेजी से बुरा बनता देख रहे है और परमेश्वर अपने संयम को निकाल रहे है।

यहां तक कि जो पापी लोग परमेश्वर को आदर करते है वे भी कुछ बातो को नही करते। लेकिन जब समाज से परमेश्वर को निकाला जाता है तो समाज का स्तर खत्म हो जाता है और परमेश्वर सबसे बुरे दुश्मन और एक बुरा सपना बन जाते है।

इस्त्राएल मे यही हुआ . .जब परमेश्वर का वचन राज नही करता तो समाज मे अराजकता आती है।परमेश्वर के बिना समाज मे व्यवस्था और संरचना नही हो सकती। पुरूष उस स्वतंत्रता के गुलाम बनते है जिसे वे ढुंढते है।

हमारे समाज मे ऐसे लोग बुरे है जो नही चाहते कि परमेश्वर के स्तर को बनाया जाए और इसके लिए उन्हे जिम्मेदार माना जाए। लेकिन जब परमेश्वर समाज को छोडते है तो उनके साथ आशा भी चली जाती है।

जब तक आपके पास परमेश्वर है तब तक आपके पास आशा है। एक वही है जिस पर आप भरोसा कर सकते है। जब तक परमेश्वर को हम देख पा रहे है और उसकी कार्यसुची या योजना है तब तक सब कुछ खत्म नही हुआ है। चाहे स्थिती कितनी भी गिर जाए तो भी परमेश्वर आपको उठा सकते है। जब तक परमेश्वर समाज, संकृती, जीवन, परिवार या कलिसिया के सामने है और केद्रबिंदू है तब तक हमे आशा है। लेकिन परमेश्वर को निकाला जाता है तो जिस तरह से लोग अपने शहर को छोडकर उपनगरो मे बसने से शहर करो (tax) को खोता है वैसे ही परमेश्वर भी अध्यात्मीक उपनगरो मे चले जाते है और हमारे समाज गिर जाते है।

प्रतिबिंब ः

परमेश्वर कि झुठी प्रतिमा कैसे किसी के लिए हानिकारक है**?**
यह समाज और संकृती को कैसे हानि पहुचाती है**?**
कौनसे क्षेत्र मे हमारी संकृती परमेश्वर के वचन से दूर हुई है**?**
हमारे परिवार ने कौनसे बातो मे परमेश्वर को छोडकर संकृती को अपनाया है और हम उसे कैसे सही कर सकते है**?**

प्रार्थना ः

पिता, मुझे मदत करना कि मै हमेशा आपको सामने देखू और अपने जीवन का केंद्र बनाऊ। और मै यह भी प्रार्थना करता हुं कि इस देश के सारे विश्वासी यही करे। हमे सारे चिजो में आपकी प्राथमिकता याद दिलाइए।

जनवरी ४ ः परमेश्वर कि कार्यसुची , परमेश्वर क्या चाहते है

मरकुस ४ ः ३० से ३२

जब हम अपने आजूबाजू देखते है तो हर एक के पास अपनी एक कार्यसुची या योजना है। लोगो के पास योजनाए, कार्य क्रम और जिन चिजो को पाना चाहते है उसकी सुची है। और उनको पाने के अपने तरिके है। वे एक सुची बनाते है लक्ष्य निर्धारित करते है और उन तक पहुचने का प्रयास करते है। शायद आपके पास भी अपनी एक योजना है।

परमेश्वर के पास भी उसकी एक कार्यसुची है और योजना है और वो उसे अपने तरीके से हासिल करना चाहते है। वचन इस योजना को 'परमेश्वर का राज्य' कहता है। परमेश्वर का राज्य इस संसार के राज्य के लिए एक विकल्प है। इस विकल्प का मतलब यही है कि परमेश्वर ने हमारे लिए एक रास्ता रखा है। परमेश्वर के लोग होने के नाते हमारे लिए सिर्फ इस संसार तक सिमीत नही है। लेकिन परमेश्वर के पास हमारे लिए एक और योजना है जिसे परमेश्वर का राज्य कहते है।

जैसे हमारी संस्कृती और समाज हमे हमेशा याद दिलाते है कि हम भारतीय नागरिक है, वैसे ही एक और राज्य है एक महान और सिध्द राज्य जिसका हम भी एक हिस्सा है, यह है परमेश्वर का राज्य।

प्रतिबिंब ः

आपके जीवन कि योजनाओ मे तीन सबसे महत्वपुर्ण बाते कौनसी है**?**
यह तीन बाते आपके जीवन के प्राथमिकता के बारे मे क्या दिखाती है**?**
आपके जीवन के प्राथमिकता मे परमेश्वर के राज्य का स्थान कहा है**?**

प्रार्थना ः
पिता, मै जिसका हिस्सा हूं, आपके उस राज्य कि महिमा और महत्व मुझे बताइए।

मुझे आपके राज्य अपने स्थान का कारण समझने लिए और मेरा उपयोग दुसरो कि भलाई और आपके महिमा के लिए करे।

जनवरी ५ ः आपका जन्मस्थान

लुका ८ ः १0

अगर आप भारतीय हो तो एक भारतीय कहलाते हो क्योंकी आपका जनम भारत मे हुआ है। वैसेही अगर आप परमेश्वर के राज्य का भाग है क्योंकी आपका जनम परमेश्वर के राज्य मे हुआ है। यह अद्‌भुत सत्य केवल आपके जीवन को ही नही बदलता, लेकिन पवित्र शास्त्र के सत्य को समजने कि चाबी भी आपको देता है।

पुरे पवित्र शास्त्र का मुख्य विषय का केंद्र यही कि 'परमेश्वर कि महिमा' और 'उसके राज्य कि बढौती'। उत्पत्ती से प्रकाशितवाक्य तक..आदि से अंत तक ..एक ही बात पर केंद्रीत है और वो है परमेश्वर के राज्य कि बढौती के द्वारा उसकी महीमा।

जब आप इस विषय मे केंद्रीत नही होते तो पवित्र शास्त्र एक प्रेरणा के रूप मे तो दिखेगा लेकिन बिना किसे उद्देश और दिशाहिन लगेगा। पवित्र शास्त्र का अस्तित्व इसलिए है कि परमेश्वर के राज्य का इतिहास समझकर उसकी स्थापना और विस्तार कि ओर बढे। उसका मुख्य आर्कषण विषय परमेश्वर का राज्य ही है।

इन सिद्धांतो को समझनसे से हजारो साल लिखे गए ये वचन हमारे रोज के जीवन मे आज भी प्रभाव करते है। क्योंकि परमेश्वर का राज्य सिर्फ पहले हि नही आज भी असित्व मे है।

प्रतिबिंब ः

पवित्र शास्त्र का मुख्य विषय समझने से हमे उसे पढने के लिए कैसे मदत होती है**?**
अगर आप पवित्र शास्त्र को सारांश संक्षेप मे बताना चाहेंगे तो कैसे वर्णन करोगे**?**
यह जानकर हमे कैसा दिलासा मिलता है पवित्र शास्त्र हमारे बारेंमें नही बल्की परमेश्वर के बारे में है**?**

प्रार्थना ः

पिता , अपने राज्य और कहानी के प्रकाश मे आपकी दुनिया देखने के लिए मेरी आंखे खोले।

मुझे वचनो का एक दुसरो से संबंध दिखाए और मुझ पर आपके दिल कि धडकन प्रकट करे, जो आपका राज्य है।

जनवरी ६ ः परमेश्वर का राज्य सर्व समावेशी है।

कुलुसियो १ ः १३ से १४

परमेश्वर का राज्य उसका शासन उसकी योजना और उसके कार्यक्रम है। वह पुरे ब्रुम्हांड को अपने शामील करता है। हम यह कह सकते है कि परमेश्वर का राज्य को सारे सृष्टी पर फैला है।
अगर परमेश्वर का राज्य व्यापक है और सारी सृष्टी तो उसके राज्य की योजना भी व्यापक है।
परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन के हर क्षेत्र मे दृश्य रूप मे है।
राज्य के लिए युनानी शब्द 'बेसिलिया' प्रयोग किया गया है जिसका मतलब है 'शासन करना' या 'अधिकार' जिसमे शक्ती कि धारणा शामिल है। इसलिए जब हम राज्य कि बात करते है तो हमे पहले राजा कि या राज्य करनेवाले कि बात करते है। यदि राज्य करने वाला है तो उसके राज्य कि प्रजा भी है 'कुलुसियो १ः१३'। इसके अलावा उसके साम्राज्य मे एक क्षेत्र शामिल है जहा राजा राज्य करता है। अंतमे अगर आपके पास राज्य करने वाला और साम्राज्य है तो राज्य कि नियमावली और दिशादर्शक भी है जो शासक और प्रजा के बीच मे रिश्तो पर राज करता है। यह इसलिए जरूरी है कि प्रजा को पता चले कि वे जो भी कर रहे है जो उनका शासक चाहता है।
परमेश्वर के राज्य में यह सब बाते शामिल है। वही सारे सृष्टी पर राज्य करता है। इस प्रकार वह पुर्ण अधिकारी है। सबपर परमेश्वर राज्य करता है और सबकुच वही चलाता है।

प्रतिबिंब ः

आप इस बात को कैसे बताएंगे कि परमेश्वर ही जीवन के हर एक क्षेत्र पर राज्य करते है**?**
आपके जीवन के कौनसे क्षेत्र को परमेश्वर के अधिकार मे देना कठिन है**?**
परमेश्वर के अधिन होने से आपको जीवन जीने के लिए कैसे मदत होती है **?**

प्रार्थना ः

पिता, मै आपको एक राजा और शासक होने के नाते पहचानता हूं और आपका आदर करता हूं। सिर्फ सारे सृष्टी पर ही नही लेकीन अपने ऊपर भी, एक ही सच्चा राजा होने के नाते मैं आपके नाम को ऊंचा करता हूं। यह जानकर कि आप सारे चीजो पर आपका नियंत्रण है। मुझे आपके दिए हुए नियमो का पालन करने के लिए मदत करना ताकि उसके द्वारा मेरी रक्षा हो सके।

जनवरी ७ ः हमे कैसे जीवन जीना है

२ रा कुरिंथ १0 ः १२

यह कहानी १९00 के दशक मे एक घडी बनाने वाले व्यक्ती के है जिसने एक छोटे से गांव मे रहता था। इस गांव के अस्सी प्रतिशत पुरूष एक स्थानिक मिल मे काम करते थे। घडी बनाने वाले व्यक्ती ने एक बात पर ध्यान दिया एक हरएक दिन एक सज्जन व्यक्ती आकर उसके दुकान बाहर कुछ पल के लिए रूकता था और अपनी घडी निकालकर दुकान के अंदर के घडी के समय के साथ अपनी घडी के समय को मिलाकर और फिर घडी को अपने जेब मे रखकर अपने रास्ते निकालता था।

कुछ हप्ते तक यह बात चलती रही। अंतमे एक सुबह जिज्ञासा मे घडी बनाने वाले व्यक्ती ने उसे रोककर उससे कहा 'मै यह देख रहा हूं कि आप आते है और रूककर अपने घडी के समय को सही करते हो और आगे बढते हो'।और आगे कहा 'सिर्फ एक जिज्ञासा के कारण मै यह सोच रहा हूं कि आप ऐसा क्या काम करते हो कि आकर मेरे छोटे से दुकान के सामने से रोज गुजरते हो और अपना दिन शुरू करने के लिए अपनी घडी के समय को लगाते हो'।

इस सज्जन ने उत्तर दिया कि वह उस मिल मे एक अधिकर्मी है और लंच के समय सीटी बजाना उसकी जिम्मेदारी है। और उसने आगे यह भी बताया कि उसको उसके घडी का समय हररोज सही करना सिर्फ इसलिए जरूरी नही कि उसके समय पर सीटी बजाने से मिल मे काम करने वालो को एक घंटे के लिए छुट्टी मिलती है लेकिन वे लोग भी अपने घडी को सही समय करने के लिए उसके सीटी बजाने के पर निर्भर है'।

घडी के दुकानवाले ने मन मे हंसकर यह कहा कि 'यह दिलचस्प बात है कि जब से मै इस गांव मे आया हूं तब से मै अपनी घडी को आपके सीटी बजाने के समय के सनुसार लगाता हूं'।

मुझे लगता है कि ऐसे लोग धार्मिकता के बारे मे करते है। हम दुसरो से अपने आप की तुलना करते है। हम हमारे विचारो को उनके कामो को देखकर करते है। और बायबल कहता है अगर हम ऐसा करते है तो वह बुध्दीमानी काम नही.. 'जो अपनी प्रशंसा करते है और अपने आप को आपस मे नाप तौलकर एक दुसरे से मिलान करके मुर्ख ठहरते है'।

हमेशा इस बात को ध्यान रखे कि दुसरे शायद आपको देखकर अपने जीवन के घडी को सही कर रहे है। परमेश्वर ने आपको एक विशेष व्यक्ती बनाया है। हमेशा याद रखे कि परमेश्वर आपको अंनत दृष्टिकोन से देखते है और उनके पास आपके लिए एक विशेष योजना है। इस दुनिया के अनुरूप मत बनना जो ढल रही है.अपने समय का अच्छा उपयोग करे क्योंकि आपके पास कितना समय है आपको पता नही। **भजनसंहिता ९0 ः १२** मे लिखा है 'हमको अपने दिन गिनने कि समज दे कि हम बुध्दीमान हो जाए'।

संसार नाश कि ओर जा रहा है । इस के अनुरूप मत बनो . अपने जीवन के घडी को यीशु के बुलावट के अनुसार चलाए जो आपके विश्वास का लेखक और पुरा करने वाला है।

मेरे जीवन को ले लो और प्रभु आपके के लिए पवित्र कर दो।

मेरे पल और दिन ले लो।

उन्हे निरंतर प्रशंसा मे बहने दो।

उन्हे निरंतर प्रशंसा मे बहने दो।

आपके जीवन के हर एक क्षण के व्दारा स्वर्गीय पिता का गौरव और सम्मान आज और आपके जीवन के सारे दिनो मे हो।

प्रतिबिंब ः

आप अपनी जीवन कि घडी कैसे लगाते (सेट करते) हो ?

प्रार्थना ः

प्रभु, मेरा मन यीशू कि ओर लगाओ . .

मेरी आंखे यीशू कि ओर लगाने दो जो मेरे विश्वास का लेखक और पुरा करने वाला है।

जनवरी ८ "राजा के सेवक"

युहन्ना १८ ः ३६

आज कई विश्वासी मानव साधनों के माध्यम से पूर्णता और महत्व खोजने की कोशिश कर रहे हैं। वे मनुष्य के तरीकों के माध्यम से अपने भाग्य की खोज करने की कोशिश कर रहे हैं। हालाँकि, मनुष्य के तरीकों ने कभी भी परमेश्वर के लक्ष्यों को पूरा नहीं किया है। यीशु ने इस बात का खुलासा किया कि जब उसने सीधे पीलातुस को जवाब दिया। यीशु ने कहा "मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते रहते, ताकि मैं यहूदियों को नहीं सौंपूँ; लेकिन जैसा भी हो, मेरा राज्य इस दायरे का नहीं है " यूहन्ना १ :३६।

संक्षेप में, उन्होंने कहा, "मेरी विधि मेरे स्रोत को दर्शाती है"। विश्वासियों के रूप में, हम संसार के नहीं बल्कि संसार के लिए कहे जाते हैं। इसी तरह, एक नाव पानी से नहीं बल्कि पानी में रहने के लिए बनी होती है। अगर नाव पानी की होने लगे और उसके अंदर पानी ले जाने लगे, तो वह जल्द ही नीचे चली जाएगी।

दुनिया में होना और फिर भी दुनिया का नहीं होने का मतलब है कि सांसारिक चीज़ें आपके फैसलों को नियंत्रण नहीं करती है ..... राजा और उसका राज्य आपकी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करता है। तुम पहले उसे खोज लो ।।।

प्रतिबिंब ः

एक मसीही को संसार मे रहना कितना महत्वपुर्ण है ?

संसार मे रहकर भी कैसे हम संसार से अलग रह सकते है ?

संसार मे होकर भी संसारिक न होने मे आपका संतुलन सही नही ?

प्रार्थना ः

पिता, मुझे अपने योजना और अपने तरीको को छोड देने के लिए मदत करना। मुझे हर एक चीजो मे आपके ऊपर भरोसा करने लिए मदत करना। और आपके के इच्छा को मेरे जीवन मे पुरा होने के लिए मदत करना। मै आपको पहले से ही धन्यवाद देता हूं जो कार्य आप मे जीवन मे करने वाले है।

जनवरी ९ "सबसे महत्वपुर्ण बातो पर ध्यान लगाना"

मत्ती ६ ः ३३

परमेश्वर का राज्य स्वर्ग और पृथ्वी की धारणा से जीवित है। इसलिए यीशु ने कहा "पहले राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करो, और ये सभी चीजें तुम्हारे साथ जोड़ी जाएंगी"

बहुत सारे मसीही क्या करते हैं, संसार के साथ परमेश्वर का थोड़ा सा मिश्रण।

प्र: क्या यह कुछ ऐसा है जो आपने किया है ?

प्र: क्या आपने परमेश्वर के बारे में कम अनुभव किया है क्योंकि उसका राज्य इस दुनिया का नहीं है?

जब आप संसार को वचन में लाते हैं, तो आप राजा से कुछ ऐसा आशीर्वाद देने के लिए कह रहे हैं जो उसका राज्य का हिस्सा नहीं है, और वह ऐसा नहीं करेगा।

अगर आप परमेश्वर के राज्य कि ओर अपनी दृष्टी खोते हो तो परमेश्वर की धारणा खो जाती है और आप जीवन के नाशवंत और लौकिक चीजो पर ध्यान लगाना शुरू करते है। जब ऐसा होता है तो आपके निर्णय चुकते है और आपके फैसले दूरदर्शी नही रहते। इसका नतीजा यह होता है कि आप अपने मकसद और लक्श को खोकर अपने समय प्रयास ऊर्जा और भावना व्यर्थ मे गवाते है।

फिर भी जब हम परमेशवर को पहला स्थान देते है तो आप देख सकते है कि आपके जीवन में स्वर्ग राज करता है।आप के जीवन मे परिस्थितीयो को बदलते हुए देखेंगे। क्योंकि परमेश्वर कोई भी परिस्थिती को बदल सकते है। जब आप उनको राज के रूप मे अपनाते है तो उनके महनता का एक ऊंचे स्तर पर अनुभव आप लेते है।

प्रतिबिंब ः

एक मसीही परमेश्वर और उसके राज्य को पहला स्थान कैसे दे सकते है ?

इस पृथ्वीपर स्वर्ग का आनंद कैसे ले सकते है?

कौनसी संसारिक बाते आपको परमेश्वर को देखने से रोक रहे है?

इसे आप कैसे बदल सकते है?

प्रार्थना ः

पिता, मै आप का एक राजा के रूप मे अनुभव लेना चाहता हूं।मुझे एहसास दिलाइए कि कहा मै मेरे विचारो निर्णयो और कार्यो मे मै आपको छोडकर संसारिक तरिके मे चल रहा हूं।इन सब चीजो को आपके वचनो से सही करने के लिए मदत करे।ताकि मै आपके वाचा और राज्य का मुझे लाभ मिले।

जनवरी १० "परमेश्वर का नुस्खा"

रोमियो ८ ः २८

कभीकभी मै रसोई घर मे जाकर देखता हूं कि मेरी पत्नी क्या पका रही है।मुझे समझ मे नही आता कि वह क्या कर रही है जब मै उसे अलग अलग चीजो को साथ मे मिलाता हुआ देखता हूं।जब मै उसे पुंछता हू कि वो क्या बना रही तो वो कहती है कि इंतजार करो और देखो।जब मै उस खाने मे उसके विशेष स्पर्श होकर वह खाना मेज पर आता है तो मै कहता हूं 'क्या स्वादिष्ट है'।

इसी तरह परमेश्वर काम करते है।वो यहा वहा से प्रेम को मिलाते है जो उस समय हमे समझ मे नही आता।लेकिन क्योंकि वो सबपर प्रभुता करता है इसलिए वो सर्वव्यापकता, सर्वशक्ती,अनुग्रह,अच्छाई और दया को साथ मे मिलाता है।और जब यह मिलके आपके हाथ मे आता है तो आप कहते है "बहुत बढिया"।

'बहुत बढिया' ऐसा वो ही लोग बोलते है जो परमेश्वर से प्रेम करते है और उनके मकसद मे शामिल होते है।आपको अपने खुद के नही बल्की उसके योजना मे शामिल होना है।आपको उसका रास्ता अपनाना है।यह ऐसा नही कि 'प्रभु मुझे यह चाहिए' बल्की यह कहना है कि 'प्रभु आप क्या चाहते है'।यही प्रश्न दिखाता है कि आप आपके राज के साथ और उसके राज्य मे बढिया जीवन जी रहे है।

प्रतिबिंबः

आपके जीवन मे आपने कहा देखा कि परमेश्वर ने खराब परिस्थीतीयो को अच्छे काम मे बदल दिया?

पवित्र शास्त्र मे आप ऐसे उदाहरण कहा देखते हो ?

खराब परिस्थीतीयो हमे परमेश्वर पर भरोसा करना मुश्कील क्यों है?

फिर भी हमे उसपर भरोसा क्यों करना है?

प्रार्थना ः

पिता,मुझे संयम और भरोसा करने वाला आत्मा दो ताकी मै हर एक परस्थिती मे आपके अच्छाई और गौरव का अनुभव ले सकू।मुझे पता है कि आप मेरे द्वारा और मेरे जीवन मे अच्छाई करोगे अगर मै आपसे प्रेम रखू और आपकी इच्छा ढुढूं जो शायद मै देख नही पा रहा हू और उन चीजो के लिए धन्यवाद देता हूं जो आप कर रहे है।

जनवरी ११ ः "सबकुछ उसके महिमा के लिए"

रोमियो ११ः३६

हर एक चीज परमेश्वर के महिमा के लिए होती है।रोमियो ११ः३६ कहता है ' उसके द्वारा उसके उसके लिए सबकुछ बना है। उस कि महिमा सदा के लिए हो। आमेन।'

जैसे कि आप जानते है कि 'आमेन' का अर्थ है 'ऐसा ही हो'।परमेश्वर कि महिमा उसके राज्य कि सबसे मत्वपुर्ण नीव है।वही उसका मकसद है।पौलुस कहता है 'सबकुछ परमेश्वर से आया है'।वही हरएक चीज का स्त्रोत है।फिर पौलुस कहता है कि सबकुछ उसके द्वारा बना है।पमरेश्वर है सृष्टी बने हर एक चीज का कारण है।और अंत मे पौलुस कहता है कि ' सबकुछ उसके लिए बना है।वही अंतीम कारण है।सबकुछ उसके पास ही लौटता है कि 'उसको सदाकी महिमा मिले।'

यह समझना मत्वपुर्ण है कि सारी सृष्टी परमेश्वर के खुशी के लिए और उसके महिमा के लिए बनी है "प्रकाशितवाक्य ४ः११"जिसमे आपका निंर्माण भी सामिल है"यशायाह ४३ः७"।परमेश्वर ने सृष्टी कि रचना आप के लिए नही बल्की खुदके लिए कि है।सबकुछ उसके महिमा के लिए बनाया है इसका मतलब आप भी।यही आपके जीवन का सबसे बडा उदेश्य है।

आपको इस तरह सोचना है निर्णय करणे है और जीना है कि लोग आपके जीवन को देखकर परमेश्वर कि महिमा करे।

प्रतिबिंब ः

मनुष्य का निर्माण परमेश्वर कि महिमा कैसे कर सकता है?

आप कैसे परमेशवर कि महिमा कर सकते हो?

इस सप्ताह आप और आपका परिवार परमेश्वर कि महिमा कैसे कर सकते ह?

प्रार्थना ः

प्रभू, आपके महिमा के लिए जीवन जीने कि मिठास को मै जानना चाहता हूं।मुझे आपके महिमा के लिए एक पात्र बनाइए और मेरे मुख के शब्दो से आपके हाथो से रचे अदभुत चीजो का वर्णन हो।

जनवरी १२ ः शैतान का राज्य क्षणिक है।

यशायाह १४ ः १२

समय के शरूवात मे ही स्वर्ग मे एक विद्रोह हुआ। 'सुबह का सितारा' लुसिफर नाम एक सुंदर और शक्तीशाली स्वर्गदुत ने अपना सिर और हात उठाया कि वह परमेश्वर के सिंहासन को हासिल करे"यशायाह १२ः१२ से १४"

परमेश्वर ने अपने सिंहासन कि रक्षा करते हुए लुसिफर को हराया और उसे स्वर्गीय राज्य से निकाल दिया।वही शैतान बन गया जिसे 'आकाश का अधिकार का हाकिम' कहा गया है "इफिसियो २ः२"। निःसंदेह वह असंतुष्ट और बदले के भावना से दुबारा उस प्रतिष्ठा और सत्ता दुबारा पाने के एक मिशन पर है।

जबकि शैतान का काम आपके आस-पास की दुनिया में स्पष्ट हो सकता है, वह अक्सर आपको भगवान के खिलाफ विद्रोह की भावना के रूप में अच्छी तरह से बोलबाला करने की कोशिश करेगा। उसकी योजनाओं के लिए सचेत रहें, वह आपके जीवन से परमेश्वर के स्थान को हटाना चाहता है।

प्रतिबिंब:

मनुष्य को परमेश्वर के विरुद्ध करके लिए शैतान क्या चाहता है?

ऐसे प्रलोभन में इंसान क्या हासिल कर सकता है?

शैतान को अपने और अपने साथी भाइयों बहनों के जीवन में कैसे हराया है?

प्रार्थना :

प्रिय प्रभु, मैं अपने जीवन में शैतान की योजना के लिए सतर्क रहना चाहता हूं। इन योजनाओं का पता लगाने के लिए मुझ मे जागरूकता प्रदान करें। मुझे वह ताकत और ज्ञान भी प्रदान करें जो मुझे गुमराह करने के लिए उसकी चालों से गिरने से बचने के लिए एक रास्ता दिखाए। आप मेरे सच्चे राजा हैं। मैं हर दिन अपने विचारों, शब्दों और कार्य के साथ उस स्थिति में आपका सम्मान करना चाहता हूं।

थोड़े समय के लिए, परमेश्वर ने शैतान को एक प्रतिद्वंद्वी राज्य के शासक के रूप में कार्य करने की अनुमति दी है, जो कि असमान मानवता और नरक के राक्षसों की दुनिया है। इस समय, शैतान का अपना राज्य है, और हम हर जगह इसके प्रभाव को देख और महसूस कर सकते हैं।जब भी आप विद्रोही गवाह वैध अधिकारियों के खिलाफ उठते हैं, आप शैतान को काम पर देख रहे हैं। वह चीज जो उसके और उसके राज्य की विशेषता है, वह दिव्य अधिकार के खिलाफ विद्रोही है।

जनवरी 13 " परमेश्वर की महिमा उनकी अकेली की है"

नीतिवचन 6: 16-17;
शैतान का मूल नाम, लुसिफर, का अर्थ है "चमकता एक सितारा।" लुसिफर परमेश्वर का मुख्य दूत था। लेकिन एक दिन उसने आईने में देखा और खुद से बहुत मुस्कुराने लगा । उसने दीवार पर दर्पण में खुद को देखा, और दर्पण का जवाब दिया, मैं उन सभी में सबसे ज्यादा निष्पक्ष हूं। "शैतान को वह मिला जो वह एक" ईश्वर परिसर "कहलाता है, वह खुद के इस स्थिति से जल्दी असंतुष्ट था ।

परमेश्वर के सिंहासन को देखते हुए, उसने सोचा, "शायद वहाँ दो के लिए कमरा है।"
यहेजकेल 28:16; परमेश्वर की प्रतिक्रिया बताते हैं, " परन्तु लेन-देन की बहुतायत के कारण तू उपद्रव से भर कर पापी हो गया; इसी से मैं ने तुझे अपवित्र जान कर परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और हे छाने वाले करूब मैं ने तुझे आग सरीखे चमकने वाले मणियों के बीच से नाश किया है। हमें शैतान की घबराहट और अहंकार की एक झलक मिलती है, जिसके कारण हमने परमेश्वर की प्रतिक्रिया को देखा, जब हमने यशायाह की पुस्तक में उसके पाँच "मैं होगा" कथन को पढ़ा। ये कथन स्पष्ट रूप से शैतान के पाप को दिखाते हैं , जो कि प्रधान है।

पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि भगवान गर्व से नफरत करता है {नितीवचन ६ ः १६ से १७} । एक कारण यह है कि गर्व से नफरत करता है कि उसके अपने ही उसके खिलाफ हो जाते है। अगली बार जब आप परमेश्वर के लिए महिमा प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह याद रखें कि शैतान के साथ क्या हुआ था।

प्रतिबिंब :
शैतान ने जब अपने बनाने वाले से बडा होने कि कोशिश कि तो परमेश्वर कि प्रतिक्रिया क्या थी।{यशायाह 40: 12-17}?
ईश्वर को घमंड से क्यों नफरत है?
आपके अपने जीवन में मूल्य कहाँ छिपा है?
आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?

प्रार्थना :
प्रभु, घमंड एक ऐसा पाप है जो महिमा को आपसे दूर ले जाना चाहता है। यह वह पाप है जिससे आप दृढ़ता से घृणा करते हैं। कभी-कभी यह अधिक स्पष्ट पाप को देखने के लिए आसान होता है क्योंकि जो लोग इस बात को अनदेखा करते हैं कि आप अक्सर दिल में आंतरिक रहते हैं। परमेश्वर, मुझे उन लोगों से श्रेष्ठ महसूस न करने में मदद करें जो स्पष्ट पापों में फंस गए हैं और मुझे गर्व का सूक्ष्म पाप पहचानने में मदद करते हैं जब यह मेरे भीतर आ जाता है ताकि मुझे आपके सामने खुद को विनम्र करने के लिए दोषी ठहराया जा सके।

जनवरी 14 "हमारा आध्यात्मिक शत्रु"

1 कुरिंथियों 1;

मसीही बनने पर हम जल्दी ही समझ जाते है कि मसीही जीवन एक युद्ध का मैदान है, खेल का मैदान नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम एक आध्यात्मिक दुश्मन के साथ संघर्ष में युद्ध लड़ रहे हैं।

शैतान की रणनीतियों में से एक यह है कि हम यह भूल जाएं कि हम आध्यात्मिक लड़ाई लड़ रहे हैं, ताकि हम संसारिक लडाई मे अपना ध्यान लगाए .
दुर्भाग्य से वह अक्सर लोगों को ऐसा करने के लिए कहता है|

क्या आपने कभी सोचा है कि "अगर मै लोगो के बारे ने नही सोचता तो मेरा जीवन और भी बढिया होता" .ज्यादातर समस्याए हमारे जीवन अलग अलग लोगो के कारण होते है . यह आपका साथी, आपका परिवार, आपका काम सहकर्मी, या ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जिनके साथ आप बस व्यवसाय करते हैं।

क्या आप कभी सोचते हैं, "यदि लोगों के लिए यह जीवन इतना अद्भुत नहीं होता?
अधिकांश समस्या जो हम सामना करते हैं, एक या किसी अन्य तरीके से, लोगों को पता लगाया जा सकता है। यह आपका साथी, आपका परिवार, आपका काम सहकर्मी, या ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जिनके साथ आप बस व्यवसाय करते हैं।

यदि आप अपने जीवन में इन संघर्षों और चुनौतियों के पर्दे के पीछे थोड़ा करीब से देखते हैं, तो आप किसी और को देखेंगे, जो आपको डराने और हराने के लिए एक योजना बना रहा है। वह शैतान है, जो अपने चारों ओर फैले इस अदृश्य युद्ध में तार खींचने और बटन दबाने में व्यस्त है।

शैतान की प्राथमिक रणनीतियों में से एक यह है कि हम लोगों के बीच एक आध्यात्मिक पतन पैदा करने के लिए इंजीनियर का उपयोग करें, जो हमारी एकता को तोड़ता है और हमारा ध्यान परमेश्वर से दूर करता है। परमेश्वर एकता का परमेश्वर है और वह वहा उपस्थित होता है जहा एकता होती है .

प्रतिबिंब :
आपके और साथी मसीहियों के बीच कुछ ऐसा है क्या जो आपके एकता के बीच है .
सच्चाई नजरअंदाज करके क्या आप किसीके साथ लगत दिशा मे जा रहे है .
आपके जीवन मे कोई ऐसा रिश्ता है जिसे आपको सही करना है .या आपको कबुल करना है कि आप सच्चाई को नजरअंदाज करके झुठी शांती मे

जीवन जी रहे है.

प्रार्थना ः
प्रिय परमेश्वर दुसरे क्या सोचते है या बोलते है इससे विचलित होकर उनके गलतीयो को देखना आसान है.लेकिन हकिकत यह कि शैतान उनको हमारे एकता को तोडने और हमे चोट पहुचाने के लिए इस्तेमाल कर रहा है.मुझे एक दया और करूणा से भरा दिल देना.और यह समझ देना कि आप हम सबसे प्रेम करते है और हमारे बीच मे एकता चाहते है.

जनवरी १५

"लोग हमारी समस्या नही है"। मरकुस ९ः२९

शैतान के साम्राज्य के बारे मे एक सच्चाई जानना हमारे लिए जरूरी है कि 'लोग हमारी समस्या नही है'। "शैतान हमारी और सबकि समस्या है"। हम सारे मसीही एकही युध्द मे है और हमारा दुश्मन एक ही है।

स्वर्गदुत और दानव वो आत्माए है जिनका भौतिक शरीर नही होता है।वे कभी कभी अपने कामो के लिए अलग अलग रूप लेते है।जैसे शैतान ने साप का रूप लिया था।जैसे यीशुने दृष्टत्माओ को डुबाने के लिए सुअरो के अंदर भेजा था।

आपकि समस्या कोई व्यक्ती नही है जैसे आप सोच रहे है।आप कि समस्या शैतान है जो आपको बहका रहा है।

जब तक आप यह एहसास नही करोगे कि आपकि लडाई मनुष्यो से नही बल्की दुष्टआत्मोओसे से है। तब तक आप उस जीत का अनुभव नही लोगे जो मसीह ने ओपके लिए हासिल कि है।

अगली बार आप किसके साथ खराब रिश्ते का सामना करोगे तो आप प्रभु के पास प्रार्थना मे जाओ।आप घुटनो पे जाकर लडाई जितो और प्रभु मे जित हासिल करो।उन सभी के लिए जो इस मे शामिल है उनके सुरक्षा और ज्ञान के लिए प्रार्थना करो और फिर देखो कि प्रभु क्या करता है।

प्रतिबिंब ः

वो कौनसा रिश्ता है जिसमे आप सोच रहे है कि सामने वाला व्यक्ती ही समस्या है ?

इन समस्या मे शैताान आपसे क्या चाहता है ?

पवित्र शास्त्र हमे इस के बारे मे क्या सिखाता है ?

आप उस व्यक्ती के बारे मे कैसे प्रार्थना कर सकते है ?

प्रार्थना ः

प्रिय पिता, मैं आपसे अपने दिल के साथ-साथ उन लोगों के दिलों में भी शांति, सुरक्षा और ज्ञान की माँग करता हूँ, जिनके साथ मैं अभी संघर्ष कर रहा हूँ, या भविष्य में संघर्ष में आ सकता हूँ। हमें यह देखने के लिए आंखें प्रदान करें कि शैतान क्या करने की कोशिश कर रहा है, और हमें उस प्रेम को प्रदान करें जो एक-दूसरे के साथ सम्मान और सम्मान के साथ व्यवहार करना आवश्यक है।

हमें संघर्ष पर काबू पाने और आपके तहत विजयी जीवन जीने का सही रास्ता दिखा।

जनवरी १६ "अनुग्रह मे दिया है"

"अंत में, प्रभु में और उसके सामर्थ्य के अनुसार मजबूत बनो।" (इफिसियों 6:10)

क्या आप जीवन के संघर्षों में कमजोर और असहाय महसूस करते हैं?

जिस ताकत के साथ आपको सफलतापूर्वक युद्ध करने की आवश्यकता है, वह पहले से ही ईश्वर द्वारा आपको प्रदान की जा चुकी है। आपके पास पहले से ही वह सब है जो आपको इस युद्ध को जीतने के लिए चाहिए। यह ताकत आपने कमाई नही है और जमा भी नही कि है।यह परमेश्वर के अनुग्रह से आप को मिली है जो आपको जीवन जीने लिए परमेश्वर ने दी है।जैसे पौलुस ने कहा "प्रभु मे और उसके सामर्थ मे मजबुत बनो"।

पॉल आपको "प्रभु में मजबूत" होने के लिए कहता है। आपकी मानवता में, आपके पास देवदूतों और उनके दिग्गजों और उन गिरे हुए स्वर्गदूतों को भी मात देने की शक्ति नहीं है।

परमेश्वरही एकमात्र ऐसा है जो शैतान को उसके स्थान पर रखने में सक्षम है। वह वह है जो आपको अंधेरे के साथ अपने मुकाबलों में जीत हासिल करने का अधिकार देता है, क्योंकि आपकी जीत उसी परमेश्वरमें ही बसी है।

शैतान के साथ युद्ध करने के लिए इच्छाशक्ति की एक खुराक से अधिक की आवश्यकता होती है। सभी युद्ध के लिए हथियार की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक युद्ध में आध्यात्मिक हथियार की आवश्यकता होती है। ये हथियार आपको परमेश्वरद्वारा दिए गए हैं, और जब आप पहनते हैं और उन्हें लागू करते हैं, तो आपको उस

जीत का आश्वासन दिया जाता है जो परमेश्वरने आपके लिए रख्खी है। आपकी ताकत उसी से आती है। इसे अच्छे से पहनें और आप अपने जीवन में उसकी जीत का अनुभव करेंगे।

<u>प्रतिबिंब</u>
आज आपको कहां शक्ति की आवश्यकता है?
क्या आप परमेश्वरद्वारा दिए गए ताकत पर भरोसा कर रहे हैं?
आपको किस क्षेत्र में परमेश्वरके ज्ञान की आवश्यकता है?

अपनी ताकत और अपनी बुद्धि के लिए प्रार्थना करें, और उस की प्रतीक्षा करें।

<u>प्रार्थना</u> ः

"परमेश्वर, मेरी ताकत आप में है। मेरे पास शैतान या उसकी शैतानियों या उनकी योजनाओं को दूर करने की क्षमता नहीं है। लेकिन आपके पास ऐसा करने के लिए पर्याप्त शक्ति है अगर मै आप के सामर्थ के नीचे आकर उसको अपनालू। जब मैं अकेले मेरी लड़ाई का सामना करना शुरू कर रहा हूं,

मुझे किसी तरह अपनी ताकत के बारे में याद दिलाना

धीरे से मुझे उकसाना कि मै आपके सामर्थ और आप मे विजय पाना याद कर सकु।

जनवरी १७ ः "अध्यात्मीकता मे सोचना"

इफिसियो ३ः१0 ताकि अब कलीसिया के द्वारा, का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।"

यदि आप नहीं जानते कि "स्वर्गीय स्थानों" में कैसे कार्य किया जाए, तो आप अपने सांसारिक स्थानों में चुनौतियों का सामना करने जा रहे हैं। बहुत से मसीही स्वर्गीय स्थानों में रहने के बिना "स्वर्गीय" रहने की कोशिश कर रहे हैं। स्वर्गीय स्थानों में, और शैतान युद्ध में हैं कि कौन पृथ्वी पर शासन करने वाले शासन की स्थापना करेगा। स्वर्गीय स्थानों में, और शैतान युद्ध में हैं कि कौन पृथ्वी पर शासन करने वाले शासन की स्थापना करेगा।
शैतानी साम्राज्य की प्रकृति हमे मजबूर करती है कि हम आध्यात्मिक रूप से सोचना सीखें। क्यूं ? क्योंकि यदि आप आध्यात्मिक रूप से नहीं सोच रहे हैं, तो आप स्वर्गीय क्षेत्रों में जो कुछ भी हो रहा है उसके अनुरूप नहीं होंगे। जब आप इसे देखते हैं तो आप शैतान के एजेंडे को नहीं पहचानते हैं, इसलिए आप आध्यात्मिक रूप से विजयी युद्ध छेड़ने में सक्षम नहीं होंगे।

स्वर्गीय स्थानो मे रहने का मतलब है अध्यात्मीक विश्व को पहचानना और धार्मिक बातो को संसारिक बातो से ज्यादा स्थान <u>देना। क्योंकि</u> आपकि सच्ची लडाई उस राज्य से है जो आपके धार्मिक जीवन को मात देना चाहता है। शैतान जानता है कि अगर वह आपको अध्यात्मीक रूप से मात दे तो भौतीक रूप मे भी हरा देगा। वह जानता है कि अगर वो आपके मन पे काबू करेगा तो आपके कर्मो पर भी काबू करेगा। स्वर्गीय स्थानों में विजयी युद्ध करने के लिए, आपको अपना मन मसीह और उसकी सच्चाई पर लगाना होगा।

<u>प्रतिबिंब:-</u>
आपके विचार कौनसे चीजो से भरे है ?
क्या आपके विचार अस्थायी, सांसारिक मुद्दों पर या अनन्त जीवन के महत्व पर केंद्रित हैं ?
आत्मिक चीजो को पहला स्थान देने के लिए आप आपकी प्राथमिकताए कैसे बदल सकते है ?

प्रार्थना ः

भगवान, मुझे पता है कि मेरी जीत स्वर्गीय स्थानों पर है। इसका मतलब है कि मुझे आपके दृष्टिकोण से आध्यात्मिक रूप से सोचने की जरूरत है कि मैं अपना नहीं हूं। मुझे यह देखने के लिए आध्यात्मिक दृष्टि दें कि आप क्या कर रहे हैं और मेरे जीवन में शत्रु की योजनाओं को हराने के लिए आपकी क्या रणनीति है। यह जानने के लिए मेरा दिल खोलिए जब शैतान मुझे हराने की कोशिश कर रहा है, और मुझे खुशी दे, क्योंकि मैंने अपना मन यीशु मसीह और उसके प्यार और शक्ति की पवित्रता पर लगाया है।

जनवरी १८

“परमेश्वर के अधिकार के नीचे जीना” ः प्रकाशितवाक्य २० ः १ से २

जब ने आदम और हव्वा को बनाया, तो उन्होंने कहा, “उन्हें समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर और मवेशियों पर और सारी पृथ्वी पर शासन करने दो” (उत्पत्ति 1:26)।
तब ने उन्हें पृथ्वी को "वश में" करने के लिए कहा (v।28)। इसे धर्मशास्त्रीय शब्दों में “प्रभुत्व करने की वाचा” के रूप में जाना जाता है।

दूसरे शब्दों में, यह असंभव था कि के पास एक ऐसा राज्य नहीं होगा जो शैतान के राज्य पर शासन करेगा और उसे पराजित करेगा।
जब यीशु मसीह अपना सहस्राब्दी राज्य स्थापित करता है, तो यह की महिमा का अंतिम, विजयी घोषणा होगा। इसके बाद शैतान को उसकी पूरी हार और फैसले के बारे में बताया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20: 1-3)।

फिर भी, अब के लिए, परमेश्वरने आपको और मुझे निर्माण करने और उनकी रचना के एक हिस्से पर शासन करने के लिए बनाया है। हर व्यक्ति उस दिव्य इरादे के साथ बनाया गया था।

आपके लिए के राज्य को समझना क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि जब परमेश्वरने कहा कि "उन्हें शासन करने दो", उसने आपके बारे में यह कहा है । यह की ओर से मेरे लिए आज्ञा है । ने कहा कि वह मनुष्य से स्वतंत्र रूप से शासन नहीं करेगा - कि मानव जाति के निर्णय अब वह क्या करेगा या क्या नहीं के बारे में वजन ले जाएगा।

परमेश्वर ने यह इसलिए किया कि वह शैतान को बता सके कि वह हमारे द्वारा उसकी महीमा कर सकते है जो उस “चमकते सितारे” से कम है।परमेश्वरके पास आपके लिए एक योजना है जो आपसे बड़ी है।

<u>प्रतिबिंब :</u>
क्या शैतान के राज्य ने आपके जीवन या आपके विचारों में प्रभाव किया है?
परमेश्वरने शैतान के राज्य के बारे में क्या किया है? प्रकाशितवाक्य 20 पढ़ें और खुलासे पर ध्यान दें।

<u>प्रार्थना ः</u>

प्रभु, आप मेरे माध्यम से चमकने की इच्छा रखते हैं। मैं दीन हूँ कि आपने मुझे शैतान और उसके शैतानों को प्रदर्शित करने के लिए चुना है। और जब मै आपना जीवना आपको समर्पित करता हूं।, तो आप मेरे माध्यम से महान चीजों को पूरा कर सकते हैं।
यीशु, बुद्धिमानी से शासन करने में मेरी मदद करो। मुझे उन स्थानों को प्रभावित करने में सक्षम करें जिनमें आपने मुझे अच्छी तरह से रखा है। अपने प्रभाव का विस्तार करें कि मुझे आपके नाम में महान चीजों का प्रदर्शन करने और आपको महिमा दिलाने के लिए इस्तेमाल करें।

जनवरी १९ ः “परमेश्वर के इच्छा के साथ चलना”

फिर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। (उत्पत्ति 1:26)।

बहुत से लोग सोचते हैं कि परमेश्वरऔर शैतान के बीच एक लड़ाई चल रही है । परमेश्वरऔर शैतान के बीच कोई लड़ाई नहीं चल रही है अगर ऐसा होता, तो यह लंबे समय तक नहीं होता।
यह कहना है कि डेविड नोरोन्हा और माइक टायसन लड़ रहे हैं। हम दोनों एक साथ रिंग में चढ़ सकते हैं ताकि इसका मुकाबला किया जा सके, लेकिन मैं अब इस उम्र में भी माइक टायसन के लिए कोई मुकाबला नहीं रखूंगा।

शैतान जिसे बनाया गया है वो परमेश्वर से मुकाबला कर नही सकता।और कोई लडाई भी नही कर सकता।लेकिन परमेश्वर ने हमे यह साबीत करने के लिए बनाया कि हम जो शैतान या उसके राक्षसो के सामने कमजोर है वो परमेश्वर के अधिन होकर और उसके राज्य का भाग बनकर शैतान को मात दे सकते है।

परमेश्वर के राज्य के उन्नत्ती और उसके महिमा के लिए हमे इस संघर्ष में डाला गया है।और यह इसलिए संभव है क्योंकि परमेश्वर ने आपको प्रभुता करने का अधिकार दिया है।

<u>प्रतिबिंब</u> :-
परमेश्वरकी प्रतिरूप में बनने का क्या मतलब है?
एक मसीही को शैतान से डरने की ज़रूरत क्यों नहीं है?
प्रभुत्व की वाचा के तहत आपके पास क्या अधिकार है?
आपका अधिकार कैसे सीमित है?

<u>प्रार्थना</u> ः
भगवान, मैं यह देखने के लिए उत्साहित हूं कि आप मेरे और उसके माध्यम से क्या करने जा रहे हैं। आपने मुझे पृथ्वी पर अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए बनाया है। आपने मुझे अपनी पवित्र आत्मा के साथ भी अवतार लिया है ताकि जब शैतान किसी तरह मुझे बाधित करना चाहता है, तो आप उसे हरा सकते हैं। मै उन चीजो देखने के लिए तैय्यार हूं जो आपने मेरे लिए बनायी है और जो आपके अधिनता मे रहकर मुझे मिलने वाली है।

<u>जनवरी २0</u>
"परमेश्वरके शब्द का अधिकार"

यहोवा ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? (उत्पत्ति 3: 1;)।

शैतान और इंसान के बीच पहली बातचीत परमेश्वरके बारे में है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि यह के वचन के बारे में है। शैतान ने हव्वा से पूछा, "क्या वास्तव में, परमेश्वरने कहा है ।।।? शैतान ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह जानता था कि के शासन से छुटकारा पाने के लिए, उसे अपने वचन के अधिकार से छुटकारा पाना होगा।

शैतान की रणनीति का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि उसने धर्म से छुटकारा पाने की कोशिश नहीं की। पूरी बातचीत परमेश्वरके बारे में है। वास्तव में, वह यहां तक कि हव्वा को यह बताने के लिए जाता है कि वह "परमेश्वरकी तरह" बन सकती है (उत्पत्ति 3: 5)।

आप धर्म का पालन करे या आप दिन भर चर्च मे जाए इससे शैतान कोइ मतलब नही।वो बस यह चाहता है कि आप परमेश्वर के वचन के अधिकार मे जीवन न बिताए।और उसने हव्वा को इसीलिए बहकाने वाले शब्द कहे।स्त्री और शैतान के बीच बातचीत होने से पहले परमेश्वर को "प्रभु परमेश्वर" कहा गय जिसका अर्थ है "सब सृष्टी पर अधिकार करने वाला"।

फिर भी जब शैतान ने हव्वा के बारे में बात की, तो उसने " प्रभु " शब्द को हटा दिया। उसने के मूल सिद्धांत को अपने राज्य के असली राजा के रूप में हटा दिया। बगीचे में यह मुद्दा था कि किसका शब्द ठीक होगा। क्या परमेश्वर"प्रभु " होंगे ? या आप आपका निर्णय लेते समय सिर्फ यह कहेंगे कि वह " " है?

<u>प्रतिबिंब</u>
क्या आप कभी को यह स्वीकार करने के लिए लुभाते हैं कि आप पर उसका आधिपत्य स्वीकार करने से बचें?
आपके जीवन का कौन सा क्षेत्र परमेश्वरके आधिपत्य में नहीं है?
इस बारे में आप क्या करेंगे?

<u>प्रार्थना</u>

"प्रभु " - यहोवा एलोहिम, आप मेरे निर्माता और मेरे प्रभु दोनों हैं। आप पवित्र, धर्मी, शक्तिशाली और पवित्र हैं। मैं कभी तुम्हारे साथ रिश्ते से अलग नहीं होना चाहता । आप मेरे प्रभु हैं और आप भी मेरे हैं।

<u>जनवरी २१ ः "परमेश्वरकी महिमा और मनुष्य का उद्देश्य"</u>

वरन आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर के तुल्य हो जाओगे। (उत्पत्ति 3:5)

जब भी आप बुराई को अपने जीवन में के परम अधिकार पर सवाल उठाने का कारण बनाते हैं, तो आप उसके राज्य में अपने प्रभाव को खतरे में डालते हैं। यही कारण है कि इतने सारे मसीही कभी भी अपने अंतीम मकसद को पूरी तरह से नहीं जीते हैं। आप एक उद्देश्यहीन जीवन जीने के लिए बनाए नहीं किए गए थे। ने आपको उसके राज्य में प्रबंधक के रूप में लिए एक जिम्मेदार पद दिया है।

बगीचे में, शैतान ने के अधिकार को उसके राज्य के शासक के रूप में चुनौती दी। उत्पत्ति 3।5 में उनकी रणनीति का पता चलता है, जहां सर्प ने हव्वा से कहा था, "ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम इसे खाओगे, तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम ईश्वर की तरह हो जाओगे, जो अच्छाई और बुराई को जानते हैं।"

शैतान ने यह सोचने के लिए पूर्व संध्या को मनाने की कोशिश की कि परमेश्वरको उसके देवता से जलन हो रही है। लेकिन शैतान जानता था कि कोई भी परमेश्वरकी तरह नहीं हो सकता। उसे कैसे पता चला? क्योंकि उसने पहले ही खुद को आजमा लिया था और स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था। शैतान ने उसी सटीक झूठ को बेचने का प्रयास किया जो उसने खुद को एक बार बेचा था।
 ने आपको उसकी महिमा के लिए बनाया है। इसलिए जब भी आप अपने लिए महिमा लेने की कोशिश करते हैं और स्वतंत्र रूप से जीते हैं, तो आप अपने उद्देश्य से बाहर रहते हैं।

<u>प्रतिबिंब</u>

परमेश्वरने आपके जीवन में जो अच्छी चीजें रखी हैं, उनके बारे में सोचने का समय निकालें। के पास जो गुण हैं, और जो वह अपनी महिमा और अपने लाभ के लिए उपयोग करता है, उसके बारे में सोचने का समय निकालें। जैसा कि आप अपने ईश्वर के बारे में सोचते हैं, उसके गुणों (चरित्र गुणों) के लिए उसका धन्यवाद दे ।

<u>प्रार्थना</u>

पिता, मैं जिस हवा में सांस लेता हूं वह आप से आती है। फेफड़े जो इसे अपने अंदर से लेते हैं। सूरज जो मुझे गर्मी देता है, वह तुमसे आता है। मैं जो भोजन करता हूं वह तुम से आता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो मैंने किया है या कभी कर सकता हूं। आप सभी चीजों के निर्माता और निर्वाहक हैं। मैं आपको प्रशंसा देता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं आप पर पूरी तरह से निर्भर हूं।

जनवरी २२ "कलिसिया का कार्य।"

1 तीमुथियुस 3: 13-15;

बाइबिल का अधिकार व्यक्ति और परिवार से चर्च तक फैलता है। चर्च के प्रभाव से परमेश्वर के राज्य का विस्तार होता है। कलिसिया जो नए नियम कि वाचा है हमे परमेश्वर के सिध्दांतो को इस तरह से जिना है कि अर्धमी भी हमारे जीवन को देखकर कहे "सही मे जिने का सही तरी का यही है"।

जब कलिसिया कलिसिया नही रहती है, तो समाज एक उत्तर की तलाश में रहता है, क्योंकि कलिसिया विशिष्ट रूप से दिव्य सत्य (1 तीमुथियुस 3: 13-15) के संरक्षण और भंडार को जमा करती हैं।

यीशु ने कहा कि उनके लोगों को "पृथ्वी का नमक" और "दुनिया का प्रकाश" होना चाहिए (मत्ती 5: 13-15)। कलिसिया का काम सच्चाई को रोशन करना है, न कि केवल सच्चाई के बारे में प्रमाण देना। चर्च के सदस्यों के रूप में, हमें सच्चाई दिखाने की जरूरत है, न कि सिर्फ इसके बारे में बात करने की। हमारा काम सिर्फ यह बताना नहीं है कि दुनिया को क्या करना चाहिए, बल्कि दुनिया के सामने यह बताना होगा कि हम क्या करते हैं।

2 तीमुथियुस 3: 16-17; हमें बाइबल दी गई ताकि परमेश्वर के लोग "हर अच्छे काम के लिए सुसज्जित" हों।

यदि बाइबल परमेश्वर के लोगों के लिए जीने के लिए पर्याप्त नहीं है, तो यह दुनिया के लिए पर्याप्त कैसे हो सकता है? अगर बाइबल हमें सीधा नहीं कर सकती है, तो आप इस दुनिया के MLA, MP, राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री ।।।।। को कैसे सीधा कर सकते हैं? अगर यह समाज में काम करने जा रहा है, तो इसे परमेश्वर के परिवार में काम करना है। आपको नमक का बरतन नहीं कहा जाता है , आपको पृथ्वी का नमक होने का काम सौंपा गया है ।
मसीह के शरीर में हमें इसी वजह से बुलाया गया हैं और हमें इसे करने के लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराना चाहिए ।

<u>प्रतिबिंब :</u>
कलिसिया ने दुनिया के लिए नमक (प्रकाश) होने के का क्या मतलब है?
परमेश्वर के लोगों को हर अच्छे काम के लिए सुसज्जित" करने का क्या मतलब है?
आपके द्वारा किए जाने वाले मार्ग में परमेश्वर ने कौन से अच्छे कार्य किए हैं?
वे लोग कौन हैं जिन्हें आपके माध्यम से दिखाए गए परमेश्वर के प्रेम की आवश्यकता है?

<u>प्रार्थना ः</u>

परमेश्वर, कई बार लोग खोए हुए और उद्धार पाए हुओ के वीच अंतर को नही समझ सकते।हमे क्षमा करे।हमे इस तरह से जीवन जी ने के लिए मदत करना कि हम आपके राज्य को खोए हुए और नाश होने वालो के सामने प्रस्तुत कर सके।

जनवरी २३ "अगुए जो परमेशवर कि ओर से है।"

नीतिवचन १४ ः ३४ " जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।"

पॉल ने हमें 1 तीमुथियुस 2: 2 में बताया; हमारे नेताओं और अधिकारीयो के लिए प्रार्थना करने के लिए ताकि हमारे पास एक शांतिपूर्ण समाज हो। हमें यह प्रार्थना करने की आवश्यकता है कि नेतें लोग परमेश्वर के काम करने के तरीके के प्रति संवेदनशील हो जाएंगे, क्योंकि समाज रहने के लिए एक उचित जगह हो सकती है अगर वायवल के सिध्दांतो पर चले।

वायवल कहता है कि परमश्वर राजाओ को चुनते है और चलाते है।दानियल २ः२१

दाऊद राजा कहता है कि "मै राजाओ के सामने तेरी गवाही दुंगा।" भजनसंहिता ११९ ः ४६ । दाउद को पता था कि समाज को परमेश्वर के नियमो पर चलना चाहिए।व्यवस्थाविवरण १७ः१९ मे बताया कि "एक राज को हर दिन परमेश्वर के नियमो को पढना है"।एक देश कि मजबुती इस बात पर निर्भर होती है कि क्या उसमे परमेश्वर के नियमो को वहा के संकृती मे अनुमती दी गयी है।

भले ही कई लोग इसे नहीं जानते हैं, हमारे सरकारी नेता भी धार्मिक नेता हैं। मंत्री के लिए ग्रीक शब्द एक धार्मिक शब्द है। इसका अर्थ है "वह जो परमेश्वर की ओर से कार्य करता है।" इसलिए यद्यपि नेता नागरिक क्षेत्र में सेवा करते हैं, फिर भी वे परमेश्वर के मंत्री हैं।

यही है, हमारे नेता का काम नागरिक क्षेत्र में परमेश्वर चाहिए और हत्यारे को उचित दंड देना चाहिए।

न्यायाधीश इसे स्वीकार करते हैं या नहीं, नियम लगाया जा रहा है- "आप हत्या नहीं करेंगे" - परमेश्वर का नियम है । उन्होंने जो कारण दिया वह यह है कि हम उनकी प्रतिरूप में बने हैं। इसलिए जब कोई व्यक्ति हत्या करता है, तो वह वास्तविकता में परमेश्वर पर हमला करता है।

इसलिए जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर के पास उसके प्रतिनिधि, उसके मंत्री, अपराधी को दंडित करने में उसकी ओर से कार्रवाई करने के लिए होता है। न्यायाधीश यह महसूस भी नहीं कर सकते हैं कि जब वे इस तरह की सजा देते हैं तो वे परमेश्वर के मंत्री के रूप में कार्य कर रहे होते हैं, लेकिन बाइबल कहती है कि वे क्या कर रहे हैं।

<u>प्रतिबिंब :</u>
यह जानना कैसे आश्वासनपूर्ण है कि शासक परमेश्वर के अधीन अधिकार देते हैं?
आपके अपने समुदाय (आपके सरकार के नेताओं, स्कूल अधिकारियों, आदि) के भीतर कौन से शासक कार्य करते हैं?
प्रार्थना करने के लिए समय निकालें कि इन लोगों को दिन में परमेश्वर का ज्ञान होगा क्योंकि वे निर्णय लेते हैं ।।। और आपके और आपके परिवार के साथ उनके प्रति भी उचित दृष्टिकोण होगा।

<u>प्रार्थना :</u>
प्रभु, आपने नियम बनाए हैं जिनके द्वारा हम जीते हैं, प्रभु। आप के द्वारा बनाई गई रचना बिना किसी शिकायत या तर्क के उन नियमों का पालन करती है। हमें अपने लोगों के रूप में अच्छी तरह से पालन करने के लिए और अपने आदेश के लिए एक दूसरे को जिम्मेदार रखने में मदद करें।

24 जनवरी 2019 -- "एक सीधी रेखा खींचना"
(यशायाह 33:22) “क्योंकि प्रभु हमारा न्यायी है, प्रभु हमारा स्वामी है, प्रभु हमारा राजा है; वह हमें बचा लेगा। ”

बाइबल के अधिकारियों द्वारा कार्य करना क्यों इतना आवश्यक है? एक साधारण प्रयोग आपकी आवश्यकता को प्रदर्शित करेगा। एक कागज लें और उस पर बीच में एक सीधी रेखा खींचने की कोशिश करें। क्या होगा? टेढ़ी हो जाएगी । आपका हाथ भले ही कितना स्थिर है, अगर आप अपने दम पर एक सीधी रेखा खींचने की कोशिश करते हैं तो कहीं न कहीं उस रेखा में एक टेढापन आ जाता है।

लेकिन अब रूलर (scale) के साथ एक सीधी रेखा का प्रयास करें। अपनी रेखा के आगे एक शासक रखें और इसके साथ एक और रेखा खींचें। अंतर स्पष्ट होगा। तुम्हें नया तरीका मिल गया है। जब आप अपने दम पर जीवन जीने की कोशिश करते हैं, तो यह टेढ़ा होने वाला है। मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि आप कितना प्रयास करते हैं या आप कितने सीधे हैं, आपका जीवन उसी में ढलता है और झुकता है, क्योंकि हम में से सबसे अच्छा अपने दम पर सीधे रहते हैं।

परमेश्वर के राज्य में हम में से कई लोग अपने दम पर जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, और हम गड़बड़ करते रहते हैं। लेकिन अगर आप परमेश्वर के वचन को अपना शासक मानते हैं और अपने जीवन को उसके मानक के अनुसार बनाते हैं, तो आप जीवन के धक्कों का ध्यान रखेंगे।

परमेश्वर के वचन ही एकमात्र अधिकार है जो हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में, हमारे पारिवारिक जीवन में, चर्च में और समाज में एक सीधी रेखा खींचने में सक्षम करेगा। इस राज्य में केवल एक राजा है, और उसके पास अपने शब्द के लिए एक शासक है। यही हमारे जीवन जीने का स्थर है।

<u>प्रतिबिंब :</u>
क्या आप अपने स्वयं के स्तर या परमेश्वर के स्तर जीवन से जी रहे हैं?
आप यह कैसे सुनिश्चित कर रहे हैं कि आप परमेश्वर के वचन को सुनें, जानें और समझें?
आप परमेश्वर के वचन से अपने बच्चों (या अपने प्रभाव के दायरे में युवा पुरुषों / महिलाओं) को कैसे प्रशिक्षित कर रहे हैं?

<u>प्रार्थना ः</u>
प्रभु, आपका वचन का अधिकार और मार्गदर्शन है जो मुझे ये जीवन आपके के जीने के लिए उपयोगी है। जैसा मै आपको ढूढ़ता हूँ आप मेरा ख्याल रखेंगे और इसके लिए- मैं वास्तव में आभारी हूं।

25 जनवरी 2019 "हमारी पहली प्राथमिकता"
भजन २५: ४; “हे प्रभु, मुझे अपने मार्ग बता; मुझे अपना रास्ता सिखाओ। ”

आपका अधिकांश जीवन चाहे वह सफलताओं पर दिखाई दे या विफलताओं को आपकी प्राथमिकताओं द्वारा निर्धारित किया जाएगा। आप अपने विचारों, इच्छाओं और विकल्पों में पहले जो डालते हैं, वह आपके सामने आने वाले फल या परिणामों को प्रभावित करेगा।

यीशु ने जो वचन पहाड पर सिखाया था उसमे उसमे उन्होने जीवन कि प्राथमिकता के बारे में सिखाय था।कलिसिया लोग शायद सोचते है कि मै बहोत बडा संदेश करता हूं। है लेकिन यीशुने यहा एक बहोत लंबा संदेश किया था।अध्याय ५ से ७ तक।

उनके संदेश मूल रूप से उनके शिष्यों को विश्वास करने वालों को संबोधित करते थे। और यह मुख्य रूप से उस राज के बारे में एक उपदेश है जिसका केंद्र बिंदु एक वचन के चारों ओर घूमता है:

वास्तव में, यह एक वचन पूरी तरह से जीवन जीने का केंद्रबिंदु है। "पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करो, और ये सब चीजें तुम्हारे साथ जुड़ जाएंगी" (मत्ती 6:33)

इन शास्त्रों से मैं जिस शब्द पर ध्यान देना चाहता हूं, वह शब्द है **"पहले",** क्योंकि इस शब्द का महत्त घटा है और इसिलिए हममे से काई लोग परमेश्वर के अनुभव को नही पा रहे है।

जीवन को अपने पूर्ण रूप से जीने के लिए और परमेश्वर को आपको करने के लिए जो कुछ भी बनाया है, उसे पूरा करने और अनुभव करने के लिए, और उसका राज्य पहले होना चाहिए। परमेश्वर बहुतों में से एक नहीं है — उसे पहले होना है।

आज हमारे अधिकांश जीवन में समस्या यह है कि परमेश्वर केवल आसपास में है; वह पहले नहीं है। मैंने अक्सर लोगों को यह कहते सुना है कि मेरे पास परमेश्वर के लिए पर्याप्त समय नहीं है, जिसका अर्थ है कि वे वास्तव में बता रहे हैं कि परमेश्वर उनके जीवन में पहले स्थान पर नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक व्यक्ति हमेशा सबसे पहले उस चीज के लिए समय बनाएगा, जो सबसे ज्यादा मायने रखता है।

<u>प्रतिबिंब :</u>
परमेश्वर का हमारे जीवन में प्रथम होने का क्या अर्थ है?
परमेश्वर को सबसे पहले देखना कैसा लगता है?
परमेश्वर आपके जीवन में दूसरा (या बाद में) कहाँ आता है ।।। और आप उसे कैसे पहले स्थान पर रख सकते हैं?

<u>प्रार्थना :</u>
प्रभु, "**पहले"** -- यही वह जगह है जहाँ आप मेरे जीवन में रहने योग्य हैं, प्रभु । हमेशा आपको पहले न रखने के लिए मुझे क्षमा करें। लेकिन मैं ऐसा करने की कोशिश करूंगा, अभी से शुरू कर रहा हूं। आपको "**पहले"** बनाने में मेरी मदद करें।

26 जनवरी 2019 "हमारा पहला प्यार"
(कुलुस्सियों 1:18) "वह शरीर, चर्च का भी प्रमुख है, और वह शुरुआत है, मृतकों में से सबसे पहला, ताकि वह स्वयं हर चीज़ में प्रथम स्थान पर आए।"

शास्त्रों में अक्सर हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं और उस भेंट के बारे में जो वह हमसे चाहता है – "पहला फल" । कई उदाहरणों के एक उदाहरण के रूप में, हम नीतिवचन 3: 9 में पढ़ते हैं; "अपने धन से और अपने सभी उत्पादों में से सबसे पहले परमेश्वर का सम्मान करें"

प्रकाशितवाक्य 2: 4 में यीशु यह नहीं कहते कि वे लोग उनसे बिल्कुल प्यार नहीं करते थे। वास्तव में, उन्होंने उन लोगों की सुस्थिर रह ने के लिए उनकी सराहना की, जिनके पास "दृढ़ता है और मेरे नाम की खातिरदारी की है, और थके हुए नहीं हैं" (v3)। लेकिन वह जो कह रहा था वह यह है कि उन्होंने अपना "पहला प्यार" छोड़ दिया था। वे अब उन्हें दिलों में या अपने जीवन में पहले नहीं मानते थे।

जब परमेश्वर जिसे आप परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हैं, उसे परमेश्वर के रूप में नहीं माना जाता है, तो उसका राज्य और उसके लाभ आपके द्वारा अनुभव नहीं किए जाते हैं। हमारे कल के वचन (मैथ्यू 6:33) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जब आप परमेश्वर को पहले रखते हैं, तो "ये सभी चीजें" आपको दी जाएंगी। उस छल्ले का सच भी सच है - जब आप पहले परमेश्वर को नहीं रखते हैं, तो आप राजा और उसके राज्य के सभी लाभों और आशीर्वादों को आप खो रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको जीवन में कोई समस्या नहीं आएगी । इसका क्या मतलब है कि आप उन समस्याओं और मुद्दों से पार पाने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित होंगे।

<u>प्रतिबिंब :</u>
यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि परमेश्वर हमारे जीवन में पहले हो?
कुलुस्सियों 1: 12-20 पढ़िए। परमेश्वर से यह मदद पूछें कि आप इस सप्ताह सबसे पहले मसीह को रखें।

<u>प्रार्थना :</u>
परमेश्वर, आप ऐसी चीज या व्यक्ती नही है जिस मे अपने जरूरत के समय बुलाया करू। आप मेरी ऊर्जा, विचारों और भावनाओं के पहले हिस्से के योग्य हैं।
मैं चाहता हूं कि आप मेरे जीवन में उस स्थान पर रहें। हमेशा आपको वहाँ रखने में मेरी मदद करें।

27 जनवरी 2019 "पहले उससे बात करो"
याकूब 1:18; " उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों॥"

आप अपने जीवन में सबसे पहले परमेश्वर को डाल रहे हैं यह जानने के लिए कि, यह सोचो कि जब आप कोई भी निर्णय लेते हैं तो आप कहां जाते हैं।

जब आपको कोई समस्या होती है उसे हल करने के लिए , या आपको मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, तो क्या आप पहले लोगों की ओर मुड़ते हैं? क्या आप पहले अपनी इच्छाओं की ओर मुड़ते हैं? या क्या आप पहले परमेश्वर, उसके वचन और उसके सिद्धांत को देखते हैं?

किसी मामले पर परमेश्वर का दृष्टिकोण प्राप्त करना और फिर उस विशेष स्थिति पर लागू करना जो आप के साथ काम कर रहे हैं, आपके जीवन में परमेश्वर स्थान का एक खुलासा है।

शायद आप सोच रहे हैं कि आप परमेश्वर से क्यों नहीं सुन रहे हैं या अपने जीवन में उनकी उपस्थिति और जीत का अनुभव क्यों नहीं कर रहे हैं। गॉड का आपके प्रश्न का उत्तर बस इतना है, "क्योंकि आप मुझे पहले नहीं देखते हैं। वास्तव में, आप दुनिया में जाते हैं — जहां मुझे पहला स्थान नहीं है । और तब आप केवल मेरे पास आते हैं जब उनमें से कोई भी चीज काम नहीं करती है। "

सफलता की कुंजी इस **"पहला"** शब्द में पाई जाती है, । यह जीवन के हर क्षेत्र पर ईश्वर के शासन की प्राथमिकता है जहां राज्य के रहने की शक्ति का एहसास होता है।

<u>प्रतिबिंब :</u>
जब आप संकट या किसी महत्वपूर्ण निर्णय का सामना करते हैं, तो आप सबसे पहले कहां जाते हैं?
आपकी निर्णय-प्रक्रिया आपकी प्राथमिकताओं के बारे में क्या कहती है?
आज के मुद्दे और विकल्पों में आप परमेश्वर को पहले स्थान पर कैसे रख सकते हैं?

<u>प्रार्थना :</u>
हे प्रभु, मुझे अपने राज्य की प्राथमिकताओं में मदद करें- क्योंकि तुम बहुतायत से भरे जीवन जीने की कुंजी हैं। हे प्रभु, मैं यह देखता हूँ कि मैं कभी-कभी विचलित होता हूँ, और मैं भूल जाता हूँ। धीरे से मुझे कुहनी मारना और मुझे याद दिलाना कि जब मैं तुमसे पहला स्थान देना भूल जाता हूँ ।

28 जनवरी 2019 "चिंता को मारने के लिए दवा"
मत्ती 6:25;

परमेश्वर कहते हैं कि यदि आप पहले उनके राज्य और उनके धार्मिकता की तलाश करेंगे, तो वह स्वेच्छा से आपको उन सभी चीजों को प्रदान करेंगे जो अक्सर आपको को आपकी चिंता का केंद्र बनाती हैं।

आपको अपनी व्यक्तिगत चिंता और चिंता को कम करने के लिए परमेश्वर के राज्य को पहले रखना हैं। चिंता के कारण

अनगिनत लोग पीड़ित हैं । चिंता आज लोगों को परेशान करने वाला एक आम मुद्दा है। शायद यह आप पर भी हमला कर रहा है?
चाहे वह नौकरियों, सुरक्षा, स्वस्थ, संबंध, उड़ान, आय, आतंकवाद, भविष्य, या कोई भी चिंता की बात है - -- चिंता हमारे जीवन से उस आनण्द को छिन लेता है जो परमेश्वर हमे देता है।

परमेश्वर ने हमें इस सिद्धांत में कहा है कि-- हम उसे और उसके राज्य को पहले स्थान देते हैं तो - वास्तव में हमें चिंता करने की जरूरत नहीं है। परमेश्वर खुद चिंता को खत्म कर देंगे । यीशु के इस उपदेश में कि हम मत्ती 6 को देख रहे हैं, हम भी पढ़ते हैं:

वी 25; "इस कारण से मैं आपसे कहता हूं, अपने जीवन के बारे में चिंतित न हों"।
V27; "और आप में से जो चिंतित होकर ।"
V28; "और आप क्यों चिंतित हैं ।।"
V31; "फिर चिंता मत करो ।।"
वी 34; "इसलिए चिंता मत करो।"
ईश्वर को प्रथम स्थान देने के लिए ये सभी कारण काफी है

<u>प्रतिबिंब</u>
जीवन में चिंता करके आपको क्या मिलेगा ?
परमेश्वर चिंता के बारे में क्या कहते हैं?
मत्ती छह पढ़ें, और याद करने के लिए एक या अधिक वचन चुनें।

<u>प्रार्थना :</u>
पिता, ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनकी मुझे चिंता है। कभी-कभी मैं इन चीजों को चिंता का विषय कहता हूं, लेकिन यह चिंता है। मैं चिंता नहीं करना चाहता, लेकिन मैं करता हूं। मुझे आप पर ध्यान केंद्रित करने और अ आपके नियंत्रण और पूर्ण इच्छा की शांति में रहने में मदद करें।

29 जनवरी 2019

"कल की चिंता करना"

मत्ती - अध्याय 6 : **34**
सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

बहोत से लोग बिता कल और आनेवाले कल इन दो चोरो के बीच मे कुस पे लटकते है। वे **कल** की वजह से **आज** को मार डालते हैं, और जो कल हो सकता है, उसके कारण वे आज बहुत डरते हैं। क्या आप जानते हैं कि "आज" वह "कल" है जिसके बारे मेंआप चिंतित थे?

दूसरे शब्दों में, जब तक आप पृथ्वी पर हैं, आप कभी भी कल से बाहर नहीं निकलेंगे। हमेशा एक कल होगा। इसलिए जब तक आप आज बनाना सीखते हैं कि आज क्या माना जाता है - आज को गले लगाने के लिए, इसे आकार दें- नहीं तो आप हमेशा अपने जीवन को या तो कल या कल से बंधे रहेंगे, या दोनों के बीच जंजीर से बंधे रहेंगे।

मैं आपको चुनौती देना चाहता हूं कि आप एक चीज को बदल दें और देखें कि एक चीज बाकी सब चीजों को बदल देगी। जब आप परमेश्वर को पहले रखते हैं, तो बाकी सभी चीजें ठीक होंगी। उसे अपने विचारों, आशाओं और निर्णयों में पहले बनाओ। उसे पहले रखें कि आप अपना समय कैसे बिताते हैं। उसे अपने आसपास की दुनिया को देखने के तरीके में पहले स्थान पर रखें। कृपया उसे पहले रखो, उसे पहले सम्मान दें, उसे पहले दें .... और बाकी चीजें ठीक होंगी।

परमेश्वर यह नहीं कहते कि उन्हें पहले रखना एक निवेदन है। यह एक राजा की मांग है। लेकिन जब आप अपने जीवन में इस सिद्धांत का पालन करना चुनते हैं, तो आप उस बहुतायत वाले जीवन का अनुभव करने के लाभों को प्राप्त करेंगे, जो मसीह के पास है।

जो आप कहते हैं, और सोचते हैं उस में जब आप उनकी इच्छा और उनके राज्य को उन सभी कार्यों में पहली प्राथमिकता देते हैं, तब आप उसे पहले डालते हैं तो परमेश्वर को आपका सहारा मिल जाता है।

प्रतिबिंब :
बिता कल और आनेवाला कल चोर कैसे होते हैं?
कैसे परमेश्वर को पहला स्थान देने से कैसे इन चोरो को हारा सकता है?

प्रार्थना :
परमेश्वर, मैं कल नहीं बदल सकता, न ही मैं कल को नियंत्रित कर सकता हूं। लेकिन आज जो कुछ होता है उसमें मेरा एक कहना है- मैं क्या सोचता हूं, मैं क्या चुनता हूं, मैं क्या करता हूं। आज, मैं आपको पहला स्थान देता हूं। आज के लिये आप को धन्यवाद!

30 जनवरी 2019

"परमेश्वर के राज्य मे जीवन"

भजन संहिता - अध्याय 25 :5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूं।

क्या आपने कभी अनुभव किया है कि परमेश्वर आपका सहारा है? यह एक कमाल की बात है। लेकिन बहुत से लोगों को कभी भी ऐसा अनुभव नहीं होता क्योंकि वे उसे पहले रखने से मना करते हैं। यह उसका राज्य है और वह सही राजा है - उसे पहले स्थान के अलावा किसी भी स्थान पर रखना मूर्खता है।

ध्यान रखें कि हम उसके "राज्य" और "उसकी धार्मिकता" की तलाश कर रहे हैं। "राज्य" का सीधा सा मतलब है कि उसका आधिकारिक शासन हमारे जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक रूप से दिखाई देता है। धार्मिकता वह स्तर है जो हमें परमेश्वर से जोड़ता है। इसमें उन सरकारी दिशानिर्देशों का पालन करना शामिल है जिन्हें उन्होंने राजा के रूप में निर्धारित किया है, और विनम्रतापूर्वक यीशु मसीह के रक्त के माध्यम से हमें परमेश्वर से जोड़ता है

धार्मिकता का मतालब है परमेश्वर के स्थर जीवन जीना . उसके राज्य और धर्म कि खोज हम सबको पहले करनी है . उसके बिना अपने राज के समर्थ न और सहारे को खो रहे है .

राज्य में रहने के दौरान, यदि आप पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करने में विफल रहते हैं, तो बाकी सब कुछ इसके बिना कुछ नहीं, आप अपने दम पर जीवन जी रहे हैं ।

प्रतिबिंब
पहले परमेश्वर के राज्य की तलाश करना क्यों आवश्यक है?
उसकी धार्मिकता की तलाश करने का क्या मतलब है?
परमेश्वर से पूछें कि आप उन्हें अपने जीवन में पहले स्थान पर रखने में मदद करें।

प्रार्थना :
परमेश्वर, मैं अपने दम पर नहीं होना चाहता। मैं चाहता हूं कि आप मेरे जीवन में अपना सही स्थान रखें। मैं चाहता हूं कि आपका राज्य और आपकी धार्मिकता मेरी प्रेरणा शक्ति और सबसे बड़ा जुनून हो ।

31 जनवरी 2019

परमेश्वरके राज्य का पासवर्ड

1 कुरिन्थियों 6:20

"क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥"

जब आप आज ख्रिस्ती समुदाय को देखते हैं, तो आप अक्सर अराजकता देखते हैं। शादियाँ टूट रही हैं; युवा संतुष्ट होने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कर्ज। नशा पागल चलाता है। और अभी तक बहुत से लोग चर्च में विश्वासयोग्य हैं, कई कहते हैं "मेरी ईसाइयत सिर्फ काम नहीं कर रही है।" वे अकेले, दुखी और निराश हैं। कई लोग यह निष्कर्ष निकालने के लिए आए हैं कि या तो ख्रिस्ती धर्म नामक यह चीज वास्तविक नहीं है, या उनके लिए वास्तविक नहीं है। हालाँकि, एक कारण है कि इतने सारे विश्वासियों को अपने जीवन में परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ की कमी हो रही है। इसका कारण यह है कि **"प्राथमिकता"** नामक पासवर्ड के बिना वे उन सभी को प्राप्त नहीं कर सकते हैं जो परमेश्वर ने उनके लिए रखा हैं। **समर्पण** के माध्यम से आप **प्राथमिकता** व्यक्त करते हैं ।

यदि आपके पास एक स्मार्टफोन है, तो आपके पास इस पर एक 'पासवर्ड है, इसलिए यदि आपने अनजाने में इसे कहीं छोड़ दिया है, तो कोई अजनबी - या कोई मित्र - इसे उठा नहीं सकता और व्यक्तिगत जानकारी का लाभ उठा नहीं सकता । पूरी प्रक्रिया कॉल एक्सेस के लिए पासवर्ड अक्सर महत्वपूर्ण होते हैं, और **विजयी राज्य** के रहने का **पासवर्ड** यह शब्द है: **पहला।**

क्या आप अपने जीवन में सबसे पहले परमेश्वर को स्थान देंगे, आपको सही आशीर्वाद, अधिकार और आवश्यकता की पहुँच प्रदान की जाएगी जो आपके लिए उनके पास है। वह आपकी जरूरतों को पूरा करेगा और आपकी इच्छाओं को पूरा करेगा। लेकिन राजा के रूप में उनके स्थान को कम नहीं किया जा सकता है। उसकी स्थिति पहले की तरह बदली नहीं जा सकती है या फिर वह उसे सस्ता कर देगा, और वह सस्ता नहीं है। मुक्ति शायद मुफ्त है, लेकिन उसके लिए यीशु मसीह को एक कीमत चुकानी पड़ी। यह सस्ता नहीं था।

प्रतिबिंब
जब आप परमेश्वर के आशीर्वाद के बारे में सोचते हैं, तो क्या आप इच्छा पूर्ति के के बारे में सोचते हैं ?
मसीह में हम सभी को क्या आशीर्वाद मिला है?
आपको व्यक्तिगत रूप से क्या आशीर्वाद मिला है?
इनमें से दो या तीन के लिए परमेश्वर का शुक्र है।

प्रार्थना :
प्रभु; आपका बलिदान के लिए, यीशु, धन्यवाद। आपके जीवन बलिदान लिए के धन्यवाद इसके कारण मैं भी अनंत जीवन को जान सकता हूँ । मुझे दिखाएं कि मैं आपको पहला स्थान क्यों नहीं दे रहा हूं , ताकि मैं इन चीजों में बदल सकूं।